Dr Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

यूरोप में वाणिज्यवाद का विकास

सामंती अर्थव्यवस्था के पतन के बाद यूरोप में एक नई आर्थिक विचारधारा का उदय हुआ, जिसे वाणिज्यवाद कहा जाता है। यह व्यवस्था पंद्रहवीं शताब्दी के बाद विशेष रूप से विकसित हुई, जब यूरोपीय देशों ने समुद्री यात्राएँ प्रारंभ कीं और नए भूभागों की खोज की। वाणिज्यवाद का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाना था। इसके अनुसार किसी राष्ट्र की समृद्धि का माप उसके पास उपलब्ध सोने और चाँदी की मात्रा से किया जाता था।

वाणिज्यवाद के अंतर्गत सरकारें व्यापार को नियंत्रित करती थीं। निर्यात को प्रोत्साहित किया जाता था और आयात को सीमित किया जाता था ताकि धन देश के बाहर न जाए। उपनिवेशों की स्थापना इसी नीति का परिणाम थी। यूरोपीय देशों ने एशिया, अफ्रीका और अमेरिका में उपनिवेश स्थापित किए और वहाँ से सस्ता कच्चा माल प्राप्त किया तथा अपने तैयार माल को उन क्षेत्रों में बेचा। इस प्रक्रिया में उपनिवेशों का अत्यधिक शोषण किया गया।

इंग्लैंड, फ्रांस और स्पेन जैसे देशों में वाणिज्यवाद अलग-अलग रूपों में विकसित हुआ। इंग्लैंड में नौवहन अधिनियमों के माध्यम से व्यापार को नियंत्रित किया गया। फ्रांस में कोलबेयर जैसे अर्थशास्त्रियों ने राज्य के नियंत्रण में उद्योगों को बढ़ावा दिया। वाणिज्यवाद के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय राज्यों की शक्ति में वृद्धि हुई और व्यापारिक वर्ग का उदय हुआ।

हालाँकि वाणिज्यवाद ने व्यापार और पूंजी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन इसकी अपनी सीमाएँ भी थीं। इस नीति ने युद्धों को बढ़ावा दिया और उपनिवेशों में असंतोष उत्पन्न किया। आगे चलकर वाणिज्यवाद की सीमाएँ ही पूंजीवाद के विकास का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

पूंजीवाद का विकास और कार्ल मार्क्स का सिद्धांत

वाणिज्यवाद के पश्चात यूरोप में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। पूंजीवाद वह आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है और उत्पादन का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। इस व्यवस्था में बाजार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है और राज्य का हस्तक्षेप सीमित रहता है। पूंजीवाद के विकास में औद्योगिक क्रांति, व्यापार का विस्तार और बैंकिंग प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

पूंजीवाद के अंतर्गत समाज मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित हो गया। एक वर्ग पूंजीपतियों का था, जिनके पास उत्पादन के साधन थे, और दूसरा वर्ग मजदूरों का था, जो अपनी श्रम शक्ति बेचकर जीवन यापन करते थे। इस व्यवस्था में उत्पादन बढ़ा, लेकिन इसके साथ-साथ मजदूरों का शोषण भी बढ़ा। मजदूरों को कम वेतन पर लंबे समय तक काम करना पड़ता था।

इसी पृष्ठभूमि में कार्ल मार्क्स का उदय हुआ। कार्ल मार्क्स ने पूंजीवाद की तीखी आलोचना की और इसे एक शोषणकारी व्यवस्था बताया। उनके अनुसार इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। उन्होंने कहा कि पूंजीपति मजदूरों के श्रम का शोषण करते हैं और अतिरिक्त मूल्य पर अधिकार कर लेते हैं। मार्क्स का मानना था कि पूंजीवाद की आंतरिक कमजोरियाँ अंततः इसके पतन का कारण बनेंगी और समाजवाद तथा साम्यवाद की स्थापना होगी।

मार्क्स के विचारों ने यूरोप और विश्व भर में गहरा प्रभाव डाला। मजदूर आंदोलनों और समाजवादी विचारधाराओं को उनके सिद्धांतों से प्रेरणा मिली। इस प्रकार पूंजीवाद और मार्क्सवाद आधुनिक यूरोपीय आर्थिक विकास की दो महत्वपूर्ण धाराएँ बन गईं।